ईसा मसीह को पाना

īsā masīh ko pānā

Finding Isa Masih

by Bakhtullah

[Ao, Khud Dekh Lo 14]

(Urdu—Hindi script)

© 2023 www.chashmamedia.org
published and printed by
Good Word, New Delhi

The title cover is a collage of 3209107 https://pixabay.com/illustrations/vintage-old-used-paper-texture-1659117/; Rev. H. Martin https://freebibleimages.org/illustrations/hm-walking-water/.

Bible quotations are from UGV.

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

फ़हरिस्त

दुनिया की सोच छोड़ दो	3
ख़ुदा बाप की मरज़ी करो	4
जान लो कि मसीह शरीअत से बरतर है	6
जान लो कि मसीह ख़ुदा का भेजा हुआ है	8
तब ही मसीह को पाओगे	10
इंजील, यूहन्ना 7:1-36	11

► **हम ईसा मसीह को किस तरह पा सकते हैं?**

हम मुग़ल बादशाह अकबर के बारे में बहुत कुछ पढ़ सकते हैं। तो भी हम उसे कभी नहीं पा सकते।

► **क्यों?**

वह तो गया-गुज़रा है। इसी तरह हम ईसा मसीह के बारे में बहुत कुछ पढ़ सकते हैं।

► **लेकिन क्या हम उसे पा भी सकते हैं?**

इंजील शरीफ़ फ़रमाती है कि हम उसे पा भी सकते हैं। उसे पाने से ही हमें नजात मिलती है।

► **तो सवाल यह है, क्या मैंने उसे पा लिया है? क्या वह मेरे दिल में बसता है? क्या मेरा उसके साथ शख़्सी ताल्लुक़ है? अगर नहीं तो मैं उसे किस तरह पाऊँ?**

अब हम इस सवाल पर ध्यान देंगे।

ईसा मसीह का किरदार अनोखा था। उसकी तालीम सुनकर लोग हक्का-बक्का रह जाते थे। उससे क़िस्म क़िस्म के मरीज़ों को शफ़ा भी मिलती थी। क्या अजब कि वह भीड़ों से घिरा रहता था। लेकिन

कुछ लोग उसकी तालीम और मोजिज़े बरदाश्त नहीं कर सकते थे। ख़ासकर यरूशलम के मज़हबी राहनुमा उससे जलते थे। जल्द ही वह उसे पकड़ने की साज़िशें करने लगे। ईसा मसीह यह जानता था। इसलिए वह काफ़ी देर तक यरूशलम से दूर गलील में ख़िदमत करता रहा।

तब झोंपड़ियों की बड़ी ईद क़रीब आई। ईसा मसीह के घरवालों ने कहा, "यह जगह छोड़कर यहूदिया चला जा ताकि तेरे पैरोकार भी वह मोजिज़े देख लें जो तू करता है। जो शख़्स चाहता है कि अवाम उसे जाने वह पोशीदगी में काम नहीं करता। अगर तू इस क़िस्म का मोजिज़ाना काम करता है तो अपने आपको दुनिया पर ज़ाहिर कर।"

► **यह लोग क्या चाहते थे?**

यहूदिया में यरूशलम था। वह ख़ुश नहीं थे कि ईसा मसीह यरूशलम से दूर ख़िदमत कर रहा है।

► **क्यों?**

यरूशलम यहूदी ईमान का मरकज़ था। वह चाहते थे कि ईसा मसीह अपने मोजिज़े वहीं कर दिखाए जहाँ सब बड़े लोग ईद के मौक़े पर जमा होंगे।

► **क्या उनकी यह सोच ठीक नहीं थी?**

नहीं। उनकी सोच सियासी थी। उन्होंने मसीह के मोजिज़े देखकर ग़लत नतीजा निकाला था। वह समझते थे कि अब वक़्त आ गया है कि ईसा मसीह मोजिज़े दिखाकर इसराईल का दुनियावी बादशाह

बन जाए। और इसके लिए ज़रूरी था कि वह यरूशलम में ही अपने मोजिज़े दिखाए। वह पोशीदगी में यानी यरूशलम से दूर काम न करे।

► **क्या वह सचमुच पोशीदगी में काम कर रहा था?**
बिलकुल नहीं। गलील में उसके मोजिज़ों और तालीम से बहुत लोगों की ज़िंदगी बदल रही थी। उन्हें जिस्मानी और रूहानी तरक़्क़ी मिल रही थी। ऐसी पोशीदगी तो ठीक ही है। इसका दुनियावी हुकूमत से क्या वास्ता? लेकिन उसके घरवाले यह बातें नहीं समझते थे। वह उससे सिर्फ़ दुनियावी फ़ायदा उठाना चाहते थे।

ईसा मसीह के जवाब से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। पहली बात,

दुनिया की सोच छोड़ दो

ईसा मसीह ने उन्हें बताया,

> अभी वह वक़्त नहीं आया जो मेरे लिए मौज़ूँ है।
> (यूहन्ना 7:6)

► **मौज़ूँ वक़्त का क्या मतलब है?**
ईसा मसीह हमेशा ख़ुदा बाप की मरज़ी के मुताबिक़ चलता था। उस वक़्त ख़ुदा बाप नहीं चाहता था कि वह जाए।

उसने फ़रमाया,

> लेकिन तुम जा सकते हो, तुम्हारे लिए हर वक़्त मौज़ूँ है। दुनिया तुमसे दुश्मनी नहीं रख सकती। लेकिन मुझसे वह दुश्मनी रखती है। (यूहन्ना 7:6-7)

उसके घरवाले दुनियावी सोच रखते थे। वह ख़याल ही नहीं करते थे कि ख़ुदा की मरज़ी क्या है। इसलिए उनके लिए हर वक़्त मौज़ूँ था। इसलिए दुनिया उनसे दुश्मनी नहीं रखती थी। वह ईसा मसीह से दुश्मनी रखती थी क्योंकि उसकी सोच फ़रक़ थी।

► **क्या आप ईसा मसीह को पाना चाहते हैं?**
दुनियावी सोच छोड़ दो। दूसरी बात,

ख़ुदा बाप की मरज़ी करो

घरवाले ईद मनाने यरूशलम चले गए। लेकिन कुछ देर बाद ईसा मसीह को ख़ुदा बाप से हिदायत मिली कि वह ईद पर जाए। तब वह चुपके से रवाना हुआ।

यरूशलम में यहूदी राहनुमा पहले से उसकी ताक में बैठे थे। बुड़बुड़ा रहे थे, “वह आदमी कहाँ है?” आम लोग भी आपस में फुसफुसा रहे थे। कुछ उसके हक़ में थे, कुछ उसके ख़िलाफ़। लेकिन कोई खुलकर बात नहीं कर रहा था क्योंकि सब यहूदी राहनुमाओं से डरते थे।

ईद का आधा हिस्सा गुज़र चुका था तो ईसा मसीह बैतुल-मुक़द्दस में जाकर तालीम देने लगा। उसे सुनकर लोग हैरतज़दा हुए।

► **क्यों?**

उन्होंने कहा, “यह आदमी किस तरह इतना इल्म रखता है हालाँकि इसने कहीं से भी तालीम हासिल नहीं की!”

► **ईसा मसीह ने जवाब में क्या कहा?**

> जो तालीम मैं देता हूँ वह मेरी अपनी नहीं बल्कि उसकी है जिसने मुझे भेजा। (यूहन्ना 7:16)

► **किसने उसे भेजा था?**

ख़ुदा बाप ने उसे भेजा था। यह किताबों से रटी-रटाई तालीम नहीं थी। यह तो सीधे ख़ुदा बाप से मिली तालीम थी। ईसा मसीह सिर्फ़ वह कुछ फ़रमाता और करता है जो ख़ुदा बाप की मरज़ी है।

अब उसने एक और चौंका देनेवाली बात फ़रमाई,

> जो उसकी मरज़ी पूरी करने के लिए तैयार है वह जान लेगा कि मेरी तालीम अल्लाह की तरफ़ से है। (यूहन्ना 7:17)

ईसा मसीह की तालीम ख़ुदा की तरफ़ से है।

► **हम यह किस तरह जान सकते हैं?**

ख़ुदा की मरज़ी करने से। जो ख़ुदा की मरज़ी करने के लिए तैयार रहता है वह एकदम जान लेता है कि ईसा मसीह की तालीम ख़ुदा की तरफ़ से है। यह दुश्मन ख़ुदा की मरज़ी करने को तैयार नहीं थे

इसलिए वह रूहानी तौर से अंधे थे। वह बस अपनी इज़्ज़त के पीछे पड़े रहते थे। इसलिए ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> जो अपनी तरफ़ से बोलता है वह अपनी ही इज़्ज़त चाहता है। लेकिन जो अपने भेजनेवाले की इज़्ज़तो-जलाल बढ़ाने की कोशिश करता है वह सच्चा है और उसमें नारास्ती नहीं है।
> (यूहन्ना 7:18)

► **क्या आप ख़ुदा की मरज़ी करने को तैयार रहते हैं? क्या आप अपनी ज़िंदगी से उसकी इज़्ज़त कर रहे हैं?**

तब ही आप ईसा मसीह को पा सकते हैं। तीसरी बात,

जान लो कि मसीह शरीअत से बरतर है

► **तो यह दुश्मन किस नाते से ख़ुदा की मरज़ी करने को तैयार नहीं थे?**

अब ईसा मसीह ने इसका जवाब दिया। उसने फ़रमाया,

> क्या मूसा ने तुमको शरीअत नहीं दी? तो फिर तुम मुझे क़त्ल करने की कोशिश क्यों कर रहे हो?
> (यूहन्ना 7:19)

► **क्या शरीअत क़त्ल करने की इजाज़त देती है?**

हरगिज़ नहीं। तो भी दुश्मन उसे क़त्ल करने की कोशिश कर रहे थे। वह ख़ुदा की मरज़ी नहीं कर रहे थे। इसलिए वह सच्चे नहीं थे। इसलिए वह पहचान नहीं सकते थे कि ईसा, अल-मसीह है। सिर्फ़ सच्चा दिल उसे पहचान सकता है।

सुननेवालों ने कहा, "तुम किसी बदरूह की गिरिफ़्त में हो। कौन तुम्हें क़त्ल करने की कोशिश कर रहा है?" हालाँकि कम-से-कम राहनुमा ज़रूर उसे क़त्ल करने की कोशिश कर रहे थे।

► **वह क्यों उसे क़त्ल करना चाहते थे?**

कुछ महीनों पहले उसने यरूशलम में एक माज़ूर आदमी को सबत के दिन शफ़ा दी थी। यहूदी राहनुमा जलकर उसे क़त्ल करने की साज़िशें करने लगे थे। ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> मैंने सबत के दिन एक ही मोजिज़ा किया और तुम सब हैरतज़दा हुए। लेकिन तुम भी सबत के दिन काम करते हो। तुम उस दिन अपने बच्चों का ख़तना करवाते हो। और यह रस्म मूसा की शरीअत के मुताबिक़ ही है ... क्योंकि शरीअत के मुताबिक़ लाज़िम है कि बच्चे का ख़तना आठवें दिन करवाया जाए, और अगर यह दिन सबत हो तो तुम फिर भी अपने बच्चे का ख़तना करवाते हो ताकि शरीअत की ख़िलाफ़वरज़ी न हो जाए। तो फिर तुम मुझसे क्यों नाराज़ हो कि मैंने सबत के दिन

> एक आदमी के पूरे जिस्म को शफ़ा दी?
> (यूहन्ना 7:21-23)

यहूदी उस्ताद ख़ुद कहते थे कि कुछ काम सबत के दिन किए जा सकते हैं। ख़तना एक ऐसा काम था।

अब ख़तना एक छोटा-सा काम है, और उससे इनसान बहाल नहीं होता। इसकी निसबत ईसा मसीह ने माज़ूर इनसान को रूहानी और जिस्मानी तौर पर बहाल किया था। ख़तना इनसान को बहाल नहीं कर सकता मगर ईसा मसीह यह कर सकता है। शरीअत इनसान को बताती है कि उसे क्या करना है। लेकिन वह उसे बहाल नहीं कर सकती। इसी लिए ईसा मसीह दुनिया में आया।

► **क्या आप उसे पाना चाहते हैं?**

जान लो कि वह शरीअत से बरतर है। चौथी बात,

जान लो कि मसीह ख़ुदा का भेजा हुआ है

माज़ूर की शफ़ा का ज़िक्र सुनते ही यरूशलम के कुछ रहनेवाले कहने लगे, “क्या यह वह आदमी नहीं है जिसे लोग क़त्ल करने की कोशिश कर रहे हैं? ताहम वह यहाँ खुलकर बात कर रहा है और कोई भी उसे रोकने की कोशिश नहीं कर रहा। क्या हमारे राहनुमाओं ने हक़ीक़त में जान लिया है कि यह मसीह है?”

लेकिन फिर उन्होंने ख़ुद ही यह ख़याल रद किया : “जब मसीह आएगा तो किसी को भी मालूम नहीं होगा कि वह कहाँ से है। यह आदमी फ़रक़ है। हम तो जानते हैं कि यह कहाँ से है।”

► **वह क्यों सोचते थे कि जब मसीह आएगा तो किसी को भी मालूम नहीं होगा कि वह कहाँ से है?**

यहूदियों में यह ख़याल फैल गया था कि अल-मसीह पोशीदगी में आएगा और सिर्फ़ क़ौम को छुड़ाते वक़्त ज़ाहिर हो जाएगा। इस बिना पर लोग कह रहे थे कि हम इस बंदे को जानते हैं। वह तो गलील से है। लिहाज़ा यह अल-मसीह हो ही नहीं सकता। अब देखो कि उनसे कितनी बड़ी ग़लती हो रही थी। न वह ईसा मसीह को जानते थे, न यह कि वह हक़ीक़त में कहाँ से आया है। ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> तुम मुझे जानते हो और यह भी जानते हो कि मैं कहाँ से हूँ। लेकिन मैं अपनी तरफ़ से नहीं आया। जिसने मुझे भेजा है वह सच्चा है और उसे तुम नहीं जानते। लेकिन मैं उसे जानता हूँ, क्योंकि मैं उसकी तरफ़ से हूँ और उसने मुझे भेजा है। (यूहन्ना 7:28-29)

► **ईसा मसीह अपने बारे में क्या कह रहा था?**

अच्छा, तुम जानते हो कि मैं कहाँ से हूँ? हक़ीक़त में तुम मुझे नहीं जानते। क्योंकि मुझे ख़ुदा बाप से भेजा गया है जो तुम नहीं जानते।

यह लोग इस पर फ़ख़्र करते थे कि हमें मूसा से शरीअत मिली है और इसलिए हम सच्चे ख़ुदा को जानते हैं। लेकिन इसमें उनसे ग़लती हो रही थी। वह अंधे थे। वह नहीं जानते थे कि ईसा मसीह नजात देने आया है। कितने अफ़सोस की बात।

► **मेरे दोस्त, क्या आप ख़ुदा की क़ुरबत के लिए तरसते हैं? क्या आप उसकी नज़र में मंज़ूर होना चाहते हैं?**

फिर उस पर ईमान लाओ जिसे ख़ुदा बाप ने भेजा है। ईसा मसीह पर। आख़िरी बात,

तब ही मसीह को पाओगे

जब राहनुमाओं ने देखा कि हुजूम में ऐसी बातें हो रही हैं तो उन्हों ने बैतुल-मुक़द्दस के पहरेदार ईसा मसीह को पकड़ने के लिए भेजे। लेकिन ईसा मसीह ने कहा,

> मैं सिर्फ़ थोड़ी देर और तुम्हारे साथ रहूँगा, फिर मैं उसके पास वापस चला जाऊँगा जिसने मुझे भेजा है। उस वक़्त तुम मुझे ढूँडोगे मगर नहीं पाओगे, क्योंकि जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते। (यूहन्ना 7:33-34)

► **वह क्या कहना चाहता है?**

थोड़ी देर बाद मैं ख़ुदा बाप के पास वापस लौटूँगा। तब तुम मुझे ढूँडोगे मगर नहीं पाओगे।

► **क्यों?**

- वह दुनिया की सोच रखते थे।
- वह ख़ुदा बाप की मरज़ी नहीं करते थे।
- वह नहीं पहचानते थे कि मसीह में एक आया है जो शरीअत से बरतर है।
- वह नहीं पहचानते थे कि मसीह ख़ुदा का भेजा हुआ है।

► **क्या आपने उसे पा लिया है?**

इंजील, यूहन्ना 7:1-36

इसके बाद ईसा ने गलील के इलाक़े में इधर-उधर सफ़र किया। वह यहूदिया में फिरना नहीं चाहता था क्योंकि वहाँ के यहूदी उसे क़त्ल करने का मौक़ा ढूँड रहे थे। लेकिन जब यहूदी ईद बनाम झोंपड़ियों की ईद क़रीब आई तो उसके भाइयों ने उससे कहा, “यह जगह छोड़कर यहूदिया चला जा ताकि तेरे पैरोकार भी वह मोजिज़े देख लें जो तू करता है। जो शख़्स चाहता है कि अवाम उसे जाने वह पोशीदगी में काम नहीं करता। अगर तू इस क़िस्म का मोजिज़ाना काम करता है तो अपने आपको दुनिया पर ज़ाहिर कर।” (असल में ईसा के भाई भी उस पर ईमान नहीं रखते थे।) ईसा ने उन्हें बताया, “अभी वह वक़्त नहीं आया जो मेरे लिए मौज़ूँ है। लेकिन तुम जा सकते हो, तुम्हारे लिए हर वक़्त मौज़ूँ है।

दुनिया तुमसे दुश्मनी नहीं रख सकती। लेकिन मुझसे वह दुश्मनी रखती है, क्योंकि मैं उसके बारे में यह गवाही देता हूँ कि उसके काम बुरे हैं। तुम ख़ुद ईद पर जाओ। मैं नहीं जाऊँगा, क्योंकि अभी वह वक़्त नहीं आया जो मेरे लिए मौज़ूँ है।" यह कहकर वह गलील में ठहरा रहा।

लेकिन बाद में, जब उसके भाई ईद पर जा चुके थे तो वह भी गया, अगरचे अलानिया नहीं बल्कि ख़ुफ़िया तौर पर। यहूदी ईद के मौक़े पर उसे तलाश कर रहे थे। वह पूछते रहे, "वह आदमी कहाँ है?"

हुजूम में से कई लोग ईसा के बारे में बुड़बुड़ा रहे थे। बाज़ ने कहा, "वह अच्छा बंदा है।" लेकिन दूसरों ने एतराज़ किया, "नहीं, वह अवाम को बहकाता है।" लेकिन किसी ने भी उसके बारे में खुलकर बात न की, क्योंकि वह यहूदियों से डरते थे।

ईद का आधा हिस्सा गुज़र चुका था जब ईसा बैतुल-मुक़द्दस में जाकर तालीम देने लगा। उसे सुनकर यहूदी हैरतज़दा हुए और कहा, "यह आदमी किस तरह इतना इल्म रखता है हालाँकि इसने कहीं से भी तालीम हासिल नहीं की!"

ईसा ने जवाब दिया, "जो तालीम मैं देता हूँ वह मेरी अपनी नहीं बल्कि उसकी है जिसने मुझे भेजा। जो उसकी मरज़ी पूरी करने के लिए तैयार है वह जान लेगा कि मेरी तालीम अल्लाह की तरफ़

से है या कि मेरी अपनी तरफ़ से। जो अपनी तरफ़ से बोलता है वह अपनी ही इज़्ज़त चाहता है। लेकिन जो अपने भेजनेवाले की इज़्ज़तो-जलाल बढ़ाने की कोशिश करता है वह सच्चा है और उसमें नारास्ती नहीं है। क्या मूसा ने तुमको शरीअत नहीं दी? तो फिर तुम मुझे क़त्ल करने की कोशिश क्यों कर रहे हो?"
हुजूम ने जवाब दिया, "तुम किसी बदरूह की गिरिफ़्त में हो। कौन तुम्हें क़त्ल करने की कोशिश कर रहा है?"
ईसा ने उनसे कहा, "मैंने सबत के दिन एक ही मोजिज़ा किया और तुम सब हैरतज़दा हुए। लेकिन तुम भी सबत के दिन काम करते हो। तुम उस दिन अपने बच्चों का ख़तना करवाते हो। और यह रस्म मूसा की शरीअत के मुताबिक़ ही है, अगरचे यह मूसा से नहीं बल्कि हमारे बापदादा इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब से शुरू हुई। क्योंकि शरीअत के मुताबिक़ लाज़िम है कि बच्चे का ख़तना आठवें दिन करवाया जाए, और अगर यह दिन सबत हो तो तुम फिर भी अपने बच्चे का ख़तना करवाते हो ताकि शरीअत की ख़िलाफ़वरज़ी न हो जाए। तो फिर तुम मुझसे क्यों नाराज़ हो कि मैंने सबत के दिन एक आदमी के पूरे जिस्म को शफ़ा दी? ज़ाहिरी सूरत की बिना पर फ़ैसला न करो बल्कि बातिनी हालत पहचानकर मुंसिफ़ाना फ़ैसला करो।"

उस वक़्त यरूशलम के कुछ रहनेवाले कहने लगे, “क्या यह वह आदमी नहीं है जिसे लोग क़त्ल करने की कोशिश कर रहे हैं? ताहम वह यहाँ खुलकर बात कर रहा है और कोई भी उसे रोकने की कोशिश नहीं कर रहा। क्या हमारे राहनुमाओं ने हक़ीक़त में जान लिया है कि यह मसीह है? लेकिन जब मसीह आएगा तो किसी को भी मालूम नहीं होगा कि वह कहाँ से है। यह आदमी फ़रक़ है। हम तो जानते हैं कि यह कहाँ से है।”

ईसा बैतुल-मुक़द्दस में तालीम दे रहा था। अब वह पुकार उठा, “तुम मुझे जानते हो और यह भी जानते हो कि मैं कहाँ से हूँ। लेकिन मैं अपनी तरफ़ से नहीं आया। जिसने मुझे भेजा है वह सच्चा है और उसे तुम नहीं जानते। लेकिन मैं उसे जानता हूँ, क्योंकि मैं उसकी तरफ़ से हूँ और उसने मुझे भेजा है।”

तब उन्होंने उसे गिरिफ़्तार करने की कोशिश की। लेकिन कोई भी उसको हाथ न लगा सका, क्योंकि अभी उसका वक़्त नहीं आया था। तो भी हुजूम के कई लोग उस पर ईमान लाए, क्योंकि उन्होंने कहा, “जब मसीह आएगा तो क्या वह इस आदमी से ज़्यादा इलाही निशान दिखाएगा?”

फ़रीसियों ने देखा कि हुजूम में इस क़िस्म की बातें धीमी धीमी आवाज़ के साथ फैल रही हैं। चुनाँचे उन्होंने राहनुमा इमामों के साथ मिलकर बैतुल-मुक़द्दस के पहरेदार ईसा को गिरिफ़्तार करने

के लिए भेजे। लेकिन ईसा ने कहा, “मैं सिर्फ़ थोड़ी देर और तुम्हारे साथ रहूँगा, फिर मैं उसके पास वापस चला जाऊँगा जिसने मुझे भेजा है। उस वक़्त तुम मुझे ढूँडोगे, मगर नहीं पाओगे, क्योंकि जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते।”
यहूदी आपस में कहने लगे, “यह कहाँ जाना चाहता है जहाँ हम उसे नहीं पा सकेंगे? क्या वह बैरूने-मुल्क जाना चाहता है, वहाँ जहाँ हमारे लोग यूनानियों में बिखरी हालत में रहते हैं? क्या वह यूनानियों को तालीम देना चाहता है? मतलब क्या है जब वह कहता है, ‘तुम मुझे ढूँडोगे मगर नहीं पाओगे’ और ‘जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते’।”